।। आंधा के ग्यान को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| आंधा के ग्यान को अंग ||

|| कुंण्डल्या ||

आंधो आंधो मत करा || आंधो ओ नहीं होय ।
आंधो से नर जक्त में || राम न सूजे कोय ||
राम न सूजे कोय || संत नगर में आया ।
भेद न बूझे जाय || अंध वे कहिये भाया ||
सुखराम दास आंधा तके || सन्त न चिने कोय ।
आंधो आंधो मत करा || ओ नही आंधो होय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इन्हें अंधा मत कहो,अंधे ये नहीं है , अंधे तो वे है जो रामजी की भक्ति करने वाले संत नगर में आये है,उनसे भेद नही पुछ्ते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अंधे वे है जो संतो को पहचान कर उनका ज्ञान धारण नही करते है । ||१||

भाट जाट ओर बाणीया || तिना अेक सभाव ।
प्रथम पुत्र बंछे नहीं || करे तो कर्मा चाव ||
करे तो कर्मा चाव || देहे का किरतब देखे ।
आदू पोर गुलाम || तां ही बामण कर लेखे ||
सुखराम दास अे पुन ता || हर बेमुख का डाव ।
जाट भाट और बाणीया || तीना अेक सुभाव ||२||

भाट,जाट और बणीयां तिनो का एक स्वभाव होता है । वे पहले तो पुन्न करना ही नही चाहते है व करते भी है तो फल की इच्छा से करते है । आठ पोहोर काम में आनेवाले को ही ब्राम्हण समझकर दान देते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसा पुन्न करना तो जो परमात्मा से बेमुख है उनके काम है । ||२||

|| कवित्त ||

इळा रीत सुख अेह, काम इन्द्री घट जागे ।
अेई पिंगळा माय, नार अंग सुं अंग लागे ||
सुणो सुषमणा रीत, लिंग भग संगम हुवा ।
लोथ पोंथ नर नार, नेक भर रहया न जुवा ||
सुखराम उलट जन पोंचसी, से जन ले सुख जाय ।
सीख ग्यान केता फिरे ,से रूळिया जग मांय ||३||

इळा नाडी से घट में काम की जाग्रती होती है यह सुख आता है । पिंगला में स्त्री के शरीर से शरीर मिलता है यह सुख आता है । सुखमणा में लिंग भग के संगम में जैसा सुख आता है वैसा अनुभव होता है । जैसे स्त्री पुरुष आपस में लोथ पोथ होकर जरा से भी अलग नही रहते है ऐसे ही जो साधक बंकनाल में उलट्कर इडा,पिडा,सुखमणा में भजन

कर ब्रम्हंड में पहुचते है वे अनुभव करते है,दुसरे जो ज्ञान को सीख सीख कर कहते है वे बिना सुख पाये रुलते फिरने वाले जैसे है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।१।।

मन से हीण खर स्याल, सूर कबो बुग ध्यानी ।
कोलु चलणी चीजे, ओर बागळ गत जाणी ।।
इजगर समान भूत रीछ, पितर गत होई ।
बंदर मत गत जाण, मूठ छूठे नहीं कोई ।।
धिग मत आ संसार की, विष जुग तज्यो न जाय ।
शींवरण कर सुखराम के, तज कूकस विष खाय ।।४।।

जो ज्ञानी बुध्दीहीन है वे गदहे,स्याल,सुरडा व कवे की तरह है । कोल्हु व चलनी सार को छोडकर छिल्लको को रखती है,चीचडा गाय के थन में रहते हुये भी खुन ही पीता है गाय का दूध नही पीता है । बागल की गती को देखो जिस मुंह से आहार करती है उसी से निहार करती है । इजगर पडा रहता है कुछ भी नही करता है । भूत रीछ पीतर ये सब दुसरो को दुख देने वाले है । बंदर मुट्ठी में कोई चिज पकड लेता है परंतु वापीस नही छोडता है । ऐसे ही संसारीयो की बुध्दी है जो विषयो को नही छोडते है,उन्हें धिक्कार है धिक्कार है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,भजन करनेका काम करो । भजन को छोडकर विषयोमें लगना याने कुकस खाना है । ।।२।।

मत से सुप सुण बाळ, खीर कन लियो बिचारी ।
भंवर पेप पर बेस, पूस तज बास अहारी ।।
पंखी परमळ जाण, आक में आ मिल पावे ।
खीर नीर कर साव, हंस मोती चुग खावे ।।
सीप श्वाति कुं ले रहे, खार समुंदर के मांय ।
धिग मानव सुखराम के, भगत न परखी जाय ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,भक्ति करनेवाले जनोकी बुध्दि सूप याने छाजले की तरह होनी चाहिये । जो सार को पकडकर असार को छोडता है । बालक माता के स्तन से दूध पीता है । भंवरा फूस को छोडकर सुगंध पुष्प से ही लेता है । मधु मक्खी आक पर बैठकर रस ढुंढती है । पानी व दूध शामील कर हंस के सामने रखने पर वह दूध ही पीता है और पानी को छोड देता है । हंस या तो दूध पीता है या तो मोती चुगता है । शीप खारे समुद्र में रहते हुये भी स्वाती की बुंद ही लेती है । उन मनुष्यो को धिक्कार है जो भक्ति की परीक्षा न करते आन की भक्ति धारण कर लेते है व सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ति गमा देते है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।५।।

।। इति आंधा के ज्ञान को अंग समाप्त ।।